CHAPTER 22

HISTORY

Doctoral Theses

01. उपेन्द्र कुमार
1857 औ उत्तर भारत की लोक स्मृति।
निर्देशक : डॉ. चारू गुप्ता
Th 22958

सारांश
(असत्यापित)

1857 और उत्तर भारत की लोक स्मृति मेरा यह शोध प्रबंध लोक स्मृति, लोक संस्कृति का महत्वपूर्ण हिस्सा है। यहाँ लोक स्मृति से हमारा तात्पर्य लोक संस्कृति के विभिन्न आयामों यथालोकगीत-, लोककथा-, तथा लोक यादाश्तों से है जिसके तहत विभिन्न ऐतिहासिक घटनाओं को लोकजन -माध्यमों के अनेक स्वरूपों से आम--अभिव्यक्त करते हैं। सन् सत्तावन की स्मृतियाँ भारतीय जनमानस अर्थात लोकसंस्कृति में बहुत गहरे रूप से व्याप्त है। खासकर उत्तर भारत में जहाँ 1857 का प्रभाव बहुत ज्यादा था वहाँ लोकगीतों व स्मृतियों में इसका प्रभाव काफी गहरे में देखा जा सकता है। सन् 1857 में उत्तर भारत के विद्रोहियों के काल्पनिक, सिनेमाई और प्रसिद्ध प्रतिनिधित्व को भी प्रदर्शित किया गया है। 'ब्रिटिश सम्राज्यवाद के विरुद्ध संघर्ष की पृष्ठभूमि' के अन्तर्गत साम्राज्यवाद एवं उपनिवेशवाद के विरूद्ध होने वाले संघर्ष पर विचार करते समय हमने देखा है कि देशव्यापी असंतोष का आधार क्या था, और कैसे निर्मित हुआ सन् 1857 की क्रान्ति में झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई को लोक स्मृतियों में उनको क्यों देखना जरूरी है, पहला हिस्सा कविता, उपन्यास, तथा फिल्म को देखता है। दूसरा हिस्सा झाँसी की रानी के पत्रों से लिया गया है। इस अध्याय में सन् 1857 का कोई भी लोकप्रिय अध्ययन रानी लक्ष्मीबाई की समीक्षा के बगैर कैसे अधूरा है। 'राव तुलाराम को सन् सत्तावन की क्रान्ति में हरियाणा के नायक को लोक संस्कृति के अन्तर्गत साहित्य, कविता, उपन्यास, हरियाणवी लोक गीत, संगीत, रागिणी, सोहर इत्यादि जैसे स्रोतों में किस तरह से चर्चा की गई है। यह शोध का अंश हैं। बिहार में ब्रिटिश साम्राज्यवाद के खिलाफ संघर्ष की पृष्ठभूमि एवं क्रान्ति की प्रकृति के अन्तर्गत सन् 1857 के जनव्यापी संघर्ष,' औपनिवेशिक दृष्टिकोण, पीर अली, बसुरिया बाबा, कुँवर सिंह से सम्बन्धित इतिहास लेखन का विवरण, जैसे विषयों पर चर्चा की गई है।

विषय सूची

1. भूमिका 2. झाँसी की रानी : जन-अभिव्यक्ति, स्मृति और संस्कृति 3. सन् 1857 और हरियाणा 4. सन् 1857 और बिहार। उपसंहार। परिशिष्ट। ग्रंथ सूची।

02. GOYAL (Nitin)
Dynamics of Natural Resources Management: An Environmental History of North Western Rajasthan (1746 -1887 AD)
Supervisors : Prof. R. C. Thakran and Prof. Abha Singh
Th 23202

Abstract
(Not Verified)

The historiography of medieval India generally falls short of interest in environmental concerns. Regional studies of medieval Rajasthan, no exception to this. This study primarily drawn from the rich archives of well-preserved documents in the form of bahi. Arid region of Rajasthan provides us with the clearest example of environment influencing the course of the developments of human society. The chapter 'Water Resources and its Management', shows the adaptations and accommodations that happened in the region to cope up with the scarcity of water. Local people have developed the techniques to store, manage and harvest the water that suited their needs. Chapter on Utilization and Management of Cattle Wealth shows importance of cattle and other animals in social, religious and political spheres in Bikaner has been discussed in detail. Camel is the most important commodity. people in this arid region, where fertility of the land was limited, developed a symbiotic relationship with the animals.Fourth chapter discusses even though this region has of limited vegetation, a few species of xerophytes are specific to the region like Khejri. It served as a part to many socio-religious rituals. Grasses like Bhurut, Sewan are found and acted as mainstay of cattle rearing in Bikaner. The chapter on 'Minerals and Salts', looks into minerals found in the region as well as the extraction policy adopted by the state. Through different salt treaties, British controlled the production as well as sale of salt. Specific Communities and Profession that forms local knowledge Pagi or Khoji and sunga also notable. Sunga locate the underground water without digging and were able to tell its nature also. This study attempts at bringing out a new perspective where society, economy and polity are seen as functions of environment and ecology.

Contents

1. Introduction 2. The prelude : Geographical settings 3. Water resources and its management 4. Utilization and management of cattle wealth 5. Vegetation, crop and famine 6. Minerals and salt 7. Communities and professions. Conclusion. Bibliography. Glossary. Appendices.

03. रोहित चन्द्र
उन्नीसवीं सदी का बिहार और अफ़ीम : किसान उत्पादन के संदर्भ में अध्ययन ।
निर्देशक : प्रो. अमर फारूकी
Th 23119

सारांश
(असत्यापित)

सारांश उन्नीसवीं सदी बिहार के अफ़ीम को जिस तरह का महत्व प्राप्त है, उसे लेकर खेती की प्रक्रिया और किसानों की स्थिती के बारे में विस्तृत अध्ययन का अभाव देखने को मिलता है। यह शोध प्रबंध औपनिवेशिक काल में बिहार में अफ़ीम की खेती व अन्य उत्पादन प्रक्रियाओं, तथा उसमें किसानों के स्थान, का अध्ययन है। अठारहवीं शताब्दी के अंत तक ईस्ट इंडिया कंपनी ने बिहार में अफ़ीम पर पूर्ण रूप से एकाधिकार स्थापित कर लिया था। कोई भी किसान कंपनी की अनुमति के बग़ैर अफ़ीम नहीं उगा सकता था। किसानों को अफ़ीम की खेती के लिए पट्टे दिए जाते थे, और जितने अफ़ीम का उत्पादन होता था वह सब सरकार को देना पड़ता था। ब्रिटिश सरकार उसका निर्यात करती थी। अधिकतर अफ़ीम, चीन में ब्रिटेन की मण्डियों के लिए चाय ख़रीदने, के काम आता था। बिहार में अफ़ीम के उत्पादन के नियंत्रण के लिए 'एजेंसी' व्यवस्था स्थापित की गयी थी। इस अध्ययन में अभिलेखागारों में उपलब्ध रेकॉर्डों के आधार पर 'एजेंसी' व्यवस्था द्वारा किसानों के शोषण के इतिहास को समझने का प्रयास किया गया है। ग्रामीण अर्थव्यवस्था में नील,गन्ना,गेहुं, व आलू जैसी फसलों की तुलना में अफ़ीम की खेती करने वाले

किसानो को काफी नुकसान उठाना पड़ता था जिसकी एक वजह लगान की दुगुनी व तिगुनी वसूली थी। औपनिवेशिक काल में अफ़ीम के कुशल किसान कोयरी के अलावे अन्य निम्न जातियों को जबरन अफ़ीम की खेती में धकेला गया जिससे किसानों का जातीय आधार पर आर्थिक शोषण हुआ| लगभग डेढ़ सौ सालों तक चलने वाली इस औपनिवेशिक एकाधिकार पर आधारित लूट ने ग्रामीण संरचना को विखंडित किया |

विषय सूची

1. भूमिका 2. अफ़ीम की खेती 3. ग्रामीण अर्थ व्यवस्था और अफ़ीम 4. अफ़ीम की खेती में जातीय समीकरण 5. निष्कर्ष। ग्रंथसूची।

04. SHARMA (Avantika)
Transition to the Early Historical Phase in South India- Perspectives From Archaeology.
Supervisor : Prof. B.P. Sahu
Th 23120

Contents

1. Introduction 2. The Neolithic background 3. Towards the Iron age 4. The mature Iron age 5. Early Historical South India 6. Conclusion. Bibliography.

05. TANDON (Shivangini)
Remembering Lives in Mughal India: Political Culture and Social Life in Indo-Persian Tazkiras, 16th-18th Centuries.
Supervisor : Prof. Farhat Hasan
Th 22957

Contents

1. Introduction 2. Articulating 'Domesticity' as a political space : Household-state relations in the Mughal Tazkiras 3. The politics of fosterage, feast and fealty : Representation of miraz Aziz Koka in the Tazkiras 4. Structuring the body and emotions : Gender, civility and norms of masculinity in the Mughal Tazkiras 5. An alternative gaze : Representation of elite women in the Tazkiras 6. Negotiating political spaces and contested identities: Representation of Nurjahan and Her family in the Tazkiras 7. The liminals in the lives of the elites : Marginal social groups in the Mughal Tazkiras. Conclusion. Bibliography.

M.Phil Dissertations

01. DIKI SHERPA
Kalimpong-Lhasa Route from 1904-1950 : Impact on Economy and Society.
Supervisor : Dr. David Vumlallion Zou

02. GUPTA (Rajesh Kumar)
Comics and Communalism in Late Twentieth Century.
Supervisor : Dr. Charu Gupta

03. JHA (Aakanksha)
Public Health, Colonial Medical Institutions and Medical Care for Women : A Case Study of Delhi, C. 1860 - 1920
Supervisor : Prof. Upinder Singh

04. MALIK (Pia Maria)
Disentangling the Chishti Silsila : The Husaini Tariqa and the Jawami al-Kalim.
Supervisor : Prof. Sunil Kumar

05. MASSEY (Paridhi David)
Women Writing Self-Respect Histories, 1926-47
Supervisor : Dr. Aparna Balachandran

06. प्रसाद (ललित)
खेतिहर श्रम–बलः श्रम बंधुआवाद और जाति, आगरा जनपद, उत्तर प्रदेश में 1950 से 2010 तक ।
निर्देशक : प्रो. प्रभु प्रसाद महापात्र

07. SARKAR (Anjashi)
Himalayan Porter : A social History of the Sherpas, 1950s – 2000s
Supervisor : Dr. Prabhu Prasad Mohapatra

08. SATVEER SINGH
Transfer of Technology to India 1900-1947.
Supervisor : Prof. Amar Farooqui

09. शाकिर हुसैन
भारत–चीन युद्ध 1962 : कारण, घटनाक्रम एवं परिणाम।
निर्देशक : डॉ. अनिरूद्ध देशपाण्डे

10. SURUCHI SINGH
Changing Contours of Marriage in Colonial UP : A Study of Early Twentieth Century.
Supervisor : Dr. Charu Gupta

11. साहू (हरि नारायण)
उत्तर प्रदेश के बुन्देलखण्ड क्षेत्र में आरम्भिक अधिवास प्रारूपों का एक अध्ययन (पुरा पाषाण काल से लेकर आरम्भिक ऐतिहासिक काल तक) ।
निर्देशक : प्रो. रामचन्द्र ठाकरान

12. VIVEK RANJAN
Aspects of Schooling in Delhi for Marginalized Social Groups C. 1910s to 1970s
Supervisor : Prof. Amar Farooqui